IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भक्ति आंदोलन: कबीर, नानक और मीराबाई के विशेष संदर्भ में

Vineet

Ph.D. From Department of African Studies

University of Delhi

सारांश

भक्ति आंदोलन एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सामाजिक-सांस्कृतिक क्रांति थी जो 7वीं और 17वीं शताब्दी के बीच मध्यकालीन भारत में उभरी थी। इसने कठोर सामाजिक पदानुक्रमों से अलग होने का प्रयास किया। इस आंदोलन ने भारतीय समाज, साहित्य और धार्मिक विचारों पर गहरा प्रभाव छोड़ा, विभिन्न जातियों और लिंगों के लोगों के बीच आध्यात्मिक परंपराओं को भी प्रभावित किया।

भक्ति आंदोलन ने पुजारी या जटिल अनुष्ठानों की आवश्यकता के बिना, देवता के प्रति प्रत्यक्ष और व्यक्तिगत भक्ति पर ध्यान केंद्रित किया।[1] संतों ने हिंदी, तमिल, मराठी कविता, भजन और विचार लिखे, जिससे धार्मिक शिक्षाएँ आम लोगों तक पहुँची। इस विचार को बढ़ावा दिया कि जाति, लिंग या सामाजिक स्थिति की परवाह किए बिना ईश्वर के प्रति भक्ति सभी के लिए खुली है। भक्ति संतों ने मूर्ति पूजा, अत्यधिक अनुष्ठानों और धार्मिक हठधर्मिता का विरोध किया, तथा ईश्वर के प्रति आंतरिक आस्था और प्रेम की वकालत की। भक्ति आंदोलन की शुरुआत 7वीं शताब्दी में हुई, विशेष रूप से तमिल क्षेत्र में, शेष भारत में फैलने से पहले। इस आंदोलन का नेतृत्व मुख्य रूप से अलवर और नयनार ने किया, जो क्रमशः विष्णु और शिव को समर्पित कवि-संत थे। कठोर जाति व्यवस्था और कर्मकांड परंपराओं के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में आंदोलन शुरू हुआ। आरंभिक भक्ति संतों ने पुजारियों और ब्राह्मणों के प्रभुत्व को अस्वीकार करते हुए भक्ति (भक्ति) को

[1] रामशरण शर्मा, *शूद्रों का प्राचीन इतिहास (2009)*, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, आईएसबीएन: 9788126707553, 8126707550, पेज 55

मोक्ष के मार्ग के रूप में प्रचारित किया। यह आंदोलन स्थानीय भाषाओं में भक्ति कविता, गीतों और भजनों के माध्यम से फैला।

भक्ति आंदोलन के दार्शनिक आधार

भक्ति आंदोलन ने भक्ति की अवधारणा पर जोर दिया, जिसका अर्थ है परमात्मा के लिए प्रेमपूर्ण समर्पण। इसने रूढ़िवादी हिंदू धर्म को चुनौती दी, जो कठोर जाति पदानुक्रम और कर्मकांड प्रथाओं से प्रभावित था। इस आंदोलन ने भगवद गीता और भागवत पुराण जैसे प्राचीन ग्रंथों से प्रेरणा ली।

भक्ति दर्शन के दो मुख्य स्कूल थे:

1. **सगुण भक्ति**

भारत में भक्ति आंदोलन ने समाज के आध्यात्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं को आकार देने में एक परिवर्तनकारी भूमिका निभाई। इसे दो प्रमुख धाराओं में विभाजित किया गया था: सगुण भक्ति (गुण और रूप वाले ईश्वर की पूजा) और निर्गुण भक्ति (एक निराकार, अमूर्त दिव्य वास्तविकता की पूजा)।[2] सगुण भक्ति ने राम, कृष्ण, शिव या देवी जैसे व्यक्तिगत देवता की भक्ति पर जोर दिया, जिससे धार्मिक अभ्यास आम जनता के लिए अधिक सुलभ हो गया। यह निबंध भारत में सगुण भक्ति के दार्शनिक आधार, प्रमुख संतों, साहित्यिक योगदान और इसके स्थायी प्रभाव का पता लगाता है। सगुण भक्ति वेदों, उपनिषदों, भगवद गीता और पुराणों जैसे प्राचीन हिंदू शास्त्रों में गहराई से निहित है। सगुण भक्ति का केंद्रीय दर्शन इस विश्वास के इर्द-गिर्द घूमता है कि भगवान धर्म (धार्मिकता) की स्थापना के लिए मानव-समान रूपों में प्रकट होते हैं। भक्ति मोक्ष (मुक्ति) प्राप्त करने का सबसे आसान और सबसे शक्तिशाली साधन है। समर्पण (शरणागति) और देवता के प्रति बिना शर्त प्यार ईश्वरीय कृपा की ओर ले जाता है। रामानुज के विशिष्टाद्वैत (योग्य गैर-द्वैतवाद) दर्शन और माधवाचार्य के द्वैत (द्वैतवाद) दर्शन ने सगुण भक्ति के लिए धार्मिक आधार प्रदान किया, जिसमें भक्त और भगवान के बीच एकता और भेद दोनों पर जोर दिया गया।

[2] आशा गुप्ता, *भक्ति सिद्धांत (2007),* लोकभारती प्रकाशन, ISBN:9788180311550, 8180311554, पेज 252

2. **निर्गुण भक्ति**

निर्गुण भक्ति, इस विश्वास पर आधारित है कि ईश्वर निराकार है (निर्गुण का अर्थ है "गुणहीन"), कबीर, गुरु नानक, रविदास और ज्ञानेश्वर जैसे संतों द्वारा समर्थित थी, जिन्होंने मूर्ति पूजा का विरोध किया था। यह लेख भारतीय समाज पर निर्गुण भक्ति के दर्शन, प्रमुख संतों, साहित्यिक योगदान और प्रभाव का पता लगाता है। निर्गुण भक्ति पर अद्वैत वेदांत (गैर-द्वैतवाद) का प्रभाव है[3], जैसा कि आदि शंकराचार्य द्वारा प्रचारित किया गया था, जो कहते हैं कि ब्रह्म (परम वास्तविकता) निराकार है और मानवीय धारणा से परे है। निर्गुण भक्ति के केंद्रीय सिद्धांतों में शामिल हैं: ईश्वर रूप, नाम और गुणों से परे है। भक्ति पूरी तरह से आंतरिक है, जिसके लिए किसी मंदिर, मूर्ति या अनुष्ठान की आवश्यकता नहीं है। आध्यात्मिक समानता, इस तथ्य पर आधारित है कि जाति, धर्म से ऊपर उठकर ईश्वर तक सबकी पहुँच है। निस्वार्थ प्रेम और समर्पण भक्ति का सर्वोच्च रूप है। ध्यान, आत्मनिरीक्षण के माध्यम से आंतरिक बोध, और सादा जीवन।

भक्ति परंपरा के संतों का योगदान

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कई प्रमुख भक्ति संत उभरे और सभी ने अद्वितीय योगदान दिया। उनमें से, कबीर, गुरु नानक और मीराबाई कुछ सबसे प्रभावशाली व्यक्ति थे जिन्होंने भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं पर एक अमित छाप छोड़ी थी।

कबीर (15वीं शताब्दी)

कबीर सबसे महत्वपूर्ण निर्गुण भक्ति संतों में से एक थे। वे पेशे से बुनकर थे और उन्होंने कई दोहे (दोहे) लिखे, जिनमें हिंदू धर्म और इस्लाम दोनों में धार्मिक पाखंड और कर्मकांड की आलोचना की गई थी। बीजक में एकत्रित उनकी शिक्षाओं ने जाति-आधारित भेदभाव को खारिज कर दिया और हठधर्मिता पर व्यक्तिगत आस्था पर जोर दिया। उनका प्रभाव बाद के सुधारवादी आंदोलनों और सिख शिक्षाओं में देखा जा सकता है।

भक्ति आंदोलन और कबीर

आंदोलन ने भारत में 7वीं शताब्दी के बाद धार्मिक प्रथाओं में क्रांति ला दी। इसे मोटे तौर पर दो प्रमुख स्कूलों में विभाजित किया गया था: सगुण भक्ति और निर्गुण भक्ति। निर्गुण भक्ति, इस विश्वास पर आधारित है कि ईश्वर निराकार है (निर्गुण का अर्थ है "गुणहीन"), कबीर, गुरु नानक, रविदास और ज्ञानेश्वर जैसे संतों द्वारा समर्थित थी, जिन्होंने मूर्ति पूजा और

[3] दयानंद सरस्वती, *सत्यार्थ प्रकाश (2017),* क्रीऐटस्पेस इंडिपेंडेंट पब्लिशिंग प्लेटफॉर्म, ISBN:9781978240124, 1978240120, पेज 290

कर्मकांड प्रथाओं को नकारा। कबीर (1440-1518) निर्गुण भक्ति परंपरा के सबसे प्रभावशाली संतों में से एक थे।[4] उन्होंने भक्ति आंदोलन के आदर्शों को फैलाने, आध्यात्मिक एकता, सामाजिक समानता की वकालत करने में कभी न भूलने वाली छाप छोड़ी है। कबीर की शिक्षाओं में हिंदू धर्म और इस्लाम के तत्व शामिल थे, जो सांप्रदायिक भेदभाव से परे एक सार्वभौमिक ईश्वर को बढ़ावा देते थे।

भक्ति आंदोलन में कबीर का योगदान

कबीर ने हिंदू और इस्लाम दोनों धर्मों में निरर्थक कर्मकांडों, मूर्ति पूजा और हठधर्मिता का कड़ा विरोध किया। कबीर ने इस बात पर बल दिया कि परमात्मा हर व्यक्ति के भीतर है और उसे बाहरी पूजा की आवश्यकता नहीं है। उनकी शिक्षाएँ सरल हिंदी, अवधी और ब्रज में व्यक्त की गईं। कबीर के छंद जाति भेदभाव की निंदा करते हैं, इस बात पर जोर देते हैं कि परमात्मा के समक्ष सभी इंसान समान हैं। बीजक, कबीर ग्रंथावली में संकलित और गुरु ग्रंथ साहिब में भी शामिल उनकी रचनाएँ ज्ञान और रहस्यमय अंतर्दृष्टि से भरी हैं।

गुरु नानक (15वीं-16वीं शताब्दी)

गुरु नानक भक्ति और सूफी परंपराओं से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने इक ओंकार (एक ईश्वर) के विचार का प्रचार किया और नाम जपना (ईश्वर के नाम पर ध्यान), कीरत करनी (ईमानदारी से काम करना) और वंड चकना (दूसरों के साथ साझा करना) पर जोर दिया।[5] नानक की शिक्षाओं ने समानता, सामाजिक न्याय और अंधविश्वासों की अस्वीकृति को बढ़ावा दिया। गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित उनके छंद सिख मान्यताओं के केंद्र में हैं और अलग अलग धर्म के अनुयाइयों को मार्गदर्शन देने का कार्य करते हैं।

भक्ति आंदोलन और गुरु नानक

नानक (1469-1539) ने निर्गुण भक्ति परंपरा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नानक ने कर्मकांडों से परे भक्ति पर जोर दिया। गुरु नानक ने संगठित धर्म की आलोचना की और आध्यात्मिक एकता, प्रेम और निस्वार्थ सेवा का संदेश दिया।

[4] हज़ारिप्रसाद द्विवेदी, *सूर साहित्य, (2008),* राजकमल प्रकाश प्राइवेट लिमिटेड, ISBN:9788126700813, 8126700815, पेज 38

[5] आलोचना, वॉल्यूम 26, इश्यू 77-80 (1977) राजकमल प्रकाशन, पेज 81

भक्ति आंदोलन में गुरु नानक का योगदान

नानक ने एकेश्वरवाद पर जोर दिया और कई देवताओं की पूजा को अस्वीकार कर दिया। जाति के आधार पर अर्थहीन अनुष्ठानों और सामाजिक पदानुक्रमों की निंदा की। नानक ने कहा कि सभी लोग, चाहे वे किसी भी धर्म या पृष्ठभूमि के हों, भगवान के सामने समान हैं। उनके भक्ति भजन (शबद) गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित किए गए थे, जो पंजाबी में निर्गुण भक्ति को बढ़ावा देते थे। उन्होंने विनम्रता, मानवता की सेवा और सामुदायिक कल्याण के जीवन को प्रोत्साहित किया।

गुरु नानक की शिक्षाओं में प्रमुख विषय

मूर्ति पूजा और बाहरी धार्मिक प्रदर्शनों को अस्वीकार किया। नानक ने भी पूरी तरह से मूर्ति पूजा और बाहरी आडंबरों को सिरे से नकारा था। जाति, लिंग या धर्म के आधार पर भेदभाव का विरोध किया। धार्मिक जीवन जीने, ईमानदारी से आजीविका कमाने और दूसरों के साथ साझा करने पर जोर दिया।

मीराबाई

मीराबाई, एक राजपूत राजकुमारी और कृष्ण की अनुयायी थीं। उन्होंने कृष्ण के प्रति अपने अटूट प्रेम को व्यक्त करते हुए कई भजन (भक्ति गीत) रचे। उनका जीवन और कविता भक्ति की गहरी भावना, सामाजिक मानदंडों के खिलाफ़ अवज्ञा और भौतिक धन और शाही विशेषाधिकारों की अस्वीकृति को दर्शाती है। अपनी मान्यताओं के लिए उत्पीड़न का सामना करने के बावजूद, मीराबाई ने कृष्ण का प्रचार करना जारी रखा, जिससे भक्ति की एक समृद्ध विरासत को हम देख पाते हैं।[6]

भक्ति आंदोलन और मीराबाई

मीराबाई (लगभग 1498-1547) सगुण भक्ति परंपरा की सबसे प्रसिद्ध संतों में से एक थीं। उन्होंने कई भजन लिखे, उनका गीत और संगीत कृष्ण के प्रति उनके अटूट प्रेम और समर्पण को व्यक्त करते हैं।

[6] शुक्ला आचार्य रामचन्द्र, *हिन्दी साहित्य का इतिहास (2020),* प्रभात प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, ISBN:9789384344412, 9384344419, पेज 141

भक्ति आंदोलन में मीराबाई का योगदान

मीराबाई ने कृष्ण को अपना दिव्य पति माना और उनकी स्तुति में गायन और कविता लिखने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।[7] उन्होंने सामाजिक अपेक्षाओं को चुनौती दी, महिलाओं पर लगाए गए प्रतिबंधों का पालन करने से इनकार कर दिया और इसके बजाय आध्यात्मिक मार्ग पर चल पड़ीं। भजनों की रचना राजस्थानी और ब्रज भाषा में की गई। उनकी कविता में कृष्ण भक्ति के पक्ष को खूब उभारा, व्यक्तिगत और भावनात्मक भक्ति पर जोर दिया गया। भारत में उनकी रचनाएँ पूजनीय हैं, जिन्होंने भक्ति संगीत और साहित्य को प्रभावित किया है।

मीराबाई की कविता में मुख्य विषय

कृष्ण के लिए मीराबाई के मन में पूर्ण समर्पण और बिना शर्त प्रेम था। उन्होंने अपनी भक्ति का पालन करने के लिए उन्हें अपने परिवार के साथ साथ उस समय के समाज का भी बहुत विरोध झेलना पड़ा था। मीराबाई का यह कहना था कि सच्चा मोक्ष भगवान के प्रति भक्ति और प्रेम में निहित है। उनकी कई कविताएँ कृष्ण के प्रति गहरी लालसा व्यक्त करती हैं।

भक्ति आंदोलन और भारतीय समाज

भक्ति आंदोलन की लहर ने भारतीय परिवेश को अप्रत्याशित रूप से बदलने में निर्णायक भूमिका निभाई:

1. जाति और लिंग समानता: भक्ति संतों ने जातिगत भेदभाव को खुले तौर पर खारिज कर दिया, यह वकालत करते हुए कि भगवान की भक्ति सभी के लिए खुली है। मीराबाई जैसी महिलाएँ पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती देते हुए आंदोलन में केंद्रीय व्यक्ति बन गईं।
2. क्षेत्रीय भाषा और साहित्य: ईश्वर की साधना में लीन आध्यात्मिक लोगों ने भजन और गीत लिखे जिससे आध्यात्मिक शिक्षाएँ आम लोगों तक पहुँच सकीं। इससे हिंदी, बंगाली, मराठी, तमिल और कन्नड़ में समृद्ध साहित्यिक परंपराओं का विकास हुआ।
3. हिंदू-मुस्लिम संबंधों पर प्रभाव: आंदोलन के जोर ने हिंदू और सूफी परंपराओं के बीच आम जमीन बनाई, जिससे सांप्रदायिक सद्भाव की भावना को बढ़ावा मिला।

[7] किट्टु रेड्डी, भारत का इतिहास (2008), कल्पज पब्लिकैशन, ISBN:9788178356570, 8178356570, पेज 178

आंदोलन ने धार्मिक समावेशिता और सामाजिक सुधार की नींव रखी।[8] 15वीं शताब्दी में उभरे सिख धर्म ने इस्लामी सूफी सिद्धांतों के साथ-साथ भक्ति आदर्शों को भी शामिल किया। इस्कॉन (कृष्ण चेतना के लिए अंतर्राष्ट्रीय समाज) सहित कई आधुनिक हिंदू परंपराएँ भक्ति शिक्षाओं से प्रेरणा लेना जारी रखती हैं।

मूल्यांकन

भक्ति मार्ग के साधकों के प्रयास को मात्र धार्मिक घटना मान लेना पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि यह आंदोलन एक शक्तिशाली सामाजिक और सांस्कृतिक शक्ति थी जिसने भारतीय समाज को बदल कर रख दिया। कर्मकांडों पर समानता, भक्ति और प्रेम की वकालत करके, इसने आध्यात्मिक अभिव्यक्ति को लोकतांत्रिक बनाया और हाशिए पर पड़े लोगों को आवाज़ दी। कबीर, गुरु नानक और मीराबाई आदि साधकों ने इस आंदोलन को आकार देने और पीढ़ियों को प्रेरित करने में बहुत योगदान दिया। उनकी शिक्षाएँ आज भी समकालीन भारतीय समाज में गूंजती हैं और हमें आस्था, भक्ति और एकता की शक्ति की याद दिलाती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. रामशरण शर्मा, *शूद्रों का प्राचीन इतिहास (2009)*, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, आईएसबीएन: 9788126707553, 8126707550
2. आशा गुप्ता, *भक्ति सिद्धांत (2007),* लोकभारती प्रकाशन, ISBN:9788180311550, 8180311554
3. दयानंद सरस्वती, *सत्यार्थ प्रकाश (2017),* क्रीऐटस्पेस इंडिपेंडेंट पब्लिशिंग प्लेटफॉर्म, ISBN:9781978240124, 1978240120
4. हज़ारिप्रसाद द्विवेदी, *सूर साहित्य, (2008),* राजकमल प्रकाश प्राइवेट लिमिटेड, ISBN:9788126700813, 8126700815
5. आलोचना, वॉल्यूम 26, इशू 77-80 (1977) राजकमल प्रकाशन
6. शुक्ला आचार्य रामचन्द्र, *हिन्दी साहित्य का इतिहास (2020),* प्रभात प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, ISBN:9789384344412, 9384344419
7. किट्टु रेड्डी, भारत का इतिहास (2008), कल्पज पब्लिकैशन, ISBN:9788178356570, 8178356570
8. बच्चन सिंह, *हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास (2018),* राधाकृष्ण प्रकाशन, ISBN:9788171197859, 817119785

[8] बच्चन सिंह, *हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास (2018),* राधाकृष्ण प्रकाशन, ISBN:9788171197859, 817119785X, पेज 401